International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-10-2020; Accepted: 18-10-2020; Published: 05-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 07-08

हिंदी साहित्य में व्यंग्य

रेखा श्रीवास्तव
शोधार्थी, हिंदी विभाग, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

सारांश
किसी भी विषय पर उपहास करते हुए उसकी आलोचना करना और पाठक को उस समस्या के प्रति विचलित करना ही व्यंग्य कहलाता है। रामविलास शर्मा व्यंग्य को गद्य की कसौटी कहते हैं। वास्तविकता में गद्य की सजीवता और शक्ति उसके व्यंग्य लेखन में ही होती है। यह किसी सामान्य मस्तिष्क की उपज नहीं हो सकता इसके लिए एक आलोचक और दूरदर्शी मस्तिष्क आवश्यक है। साहित्यकार समाज की विसंगतियों को अपने अलग ही दृष्टिकोण से देखता और परखता है। समाज की कुरीतियों, विसंगतियों, भष्ट्राचार, शोषण, राजनीति आदि पर व्यंग्यकार कुछ इस प्रकार से तंज कसता है कि पाठक उस समस्या की गंभीरता को आत्मसात कर उसके विषय में सोचने को विवश हो जाता है। हिंदी साहित्य में व्यंग्य लेखन की परंपरा के प्रमाण हमें कबीरदास जी के साहित्य में भी मिल जाते है– जब उन्होने धर्म के बाह्य आड़म्बरो पर तीखा व्यंग्य करते हुए उसकी आलोचना की। परन्तु हास्य व्यंग्य की नियमित परंपरा आधुनिक हिंदी साहित्य में तब से दृष्टिगोचर होती है, जब हिंदी में भारतेंदु जी का प्रादुर्भाव हुआ। भारतेंदु के पूर्व का व्यंग्य पद्यबद्ध है परन्तु आधुनिक हिंदी का व्यंग्य पद्य के साथ ही गद्याश्रित भी होता गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हास्य व्यंग्य की एक ऐसी सशक्त परंपरा चली जिसने समाज की विसंगतियो को अपने लेखन से समाज के समकक्ष अत्यंत प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया।

मूल शब्द: विसंगतियां, कुरीतियां, दृष्टिकोण, निंदा, आलोचना, सशक्त, समस्या, गंभीरता, मुखरता

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है और प्रत्येक साहित्यकार अपने युगीन परिवेश के प्रति सजग होता है। जहाँ एक ओर वह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि विषयों का गूढ़ अध्ययन करते हुए युगीन संस्कृति का वर्णन करता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विसंगतियों राजनैतिक और आर्थिक भ्रष्टाचार पर भी अपनी पैनी दृष्टि रखता है। कोई उन विसंगतियों पर अप्रत्यक्ष प्रहार करता है और कोई प्रत्यक्ष रूप से सजगता और संपूर्णता से उसे लक्ष्य बना कर अपने लेखन से पाठक के मन–मस्तिष्क को झकझोरता है। कबीरदास जी के लेखन में छलकता व्यंग्य रीतिकाल के साहित्य में नहीं दिखायी देता। आधुनिक हिंदी के प्रवर्तक भारतेंदु जी ने इस परंपरा को पुनः जीवित किया और अपने नाटकों, लेखों आदि के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का प्रयत्न किया। उनके साथ ही प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त आदि ने इस परंपरा का विकास किया। स्वतंत्रता के पश्चात् हास्य–व्यंग्य लेखको की एक ऐसी पीढ़ी भारतीय साहित्य के क्षितिज पर उभरी जिसने हिंदी में हास्य व्यंग्यपूर्ण निबंधों और कहानियों के माध्यम से व्यंग्य की एक नयी परंपरा आरंभ की।

हिंदी साहित्य और व्यंग्य लेखनः हिंदी साहित्य में इस विषय पर विवाद होता रहा कि व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा माना जाए या नहीं। 'व्यंग्य' नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें किसी भी सामाजिक विसंगति का चित्रण सीधे–साधे ढ़ंग से न करके परोक्ष रूप में किया जाता है। यदि यह कहा जाए कि व्यंग्य में मारक क्षमता होती है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वैसे तो साहित्यकार अपने व्यंग्य के लिए विषय ढूंढ ही लेता है पर जिस समाज में तनाव और विसंगतियां जितनी अधिक होती हैं व्यंग्य के लेखन हेतु विषयों की अधिकता भी वहीं अधिक होती है। हिदी लेखन के साथ भी ऐसा ही हुआ। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी को हिंदी व्यंग्य का प्रणेता कहा जाता है। उन्होने समाज की कुरीतियो और सामाजिक अव्यवस्थाओं के प्रति अपना व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो उनके लिखे काव्यों में स्पष्ट झलकता है, जैसे जब वह कहते हैं– ''काकर पाथर जोड़ि के मस्जिद लई बनाए'' या ''पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजू पहाड़ '' मुस्लिम और हिंदू धर्म पर लिखे उनके यह व्यंग्य हमें उनके व्यंग्य साहित्यकार होने के साक्ष्य देते हैं। परन्तु इसके पश्चात् साहित्य में व्यंग्य के दर्शन हमें आधुनिक साहित्य में ही मिलते हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है। उन्होने अपने नाटक, काव्य, प्रहसन आदि के माध्यम से हास्य और व्यंग्य से भरपूर सामाजिक चेतना और आधुनिकता का परिचय दिया। उनके द्वारा लिखित 'अंधेर नगरी' पराधीन भारत के शोषक वर्ग पर तीखा प्रहार करती है। उस काल की व्यंग्य परिधि में राजनैतिक विसंगतियों के साथ ही सामाजिक कुरीतियों, कुव्यवस्थाओं और विसंगतियों का आकलन भी साहित्यकार कर रहे थे। इसी काल के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों में सामाजिक विवेचन और विनोदप्रियता पर्याप्त मात्रा में मिलती है। उनके द्वारा लिखित 'उपाधि' इसी श्रेणी में आता है। विनोद और व्यंग्य श्री बालमुकुंद गुप्त की लेखन शैली के भी अभिन्न अंग रहे। उनके व्यंग्य अत्यंत चुटीले और कर्कश होते थे। लार्ड कर्जन की भारत विरोधी नीति से क्षुब्ध हो कर उन्होने 'शिव शंभु के चिटठे' नामक व्यंग्य लिखा। इसका एक उदाहरण देखिए–''अभी गत मंगलवार को नागपंचमी थी.....जो देश नाग को भी ईश्वर मानकर पूजा करता है वह क्या लार्ड कर्जन से कल्याण की कामना नहीं कर सकता ? तभी तो उसका स्वागत करता है।'' हिंदी गद्य के इस विकासोन्मुख काल में व्यंग्य का जो रूप विकसित हुआ, उसमें विषयों की बहुलता, प्रखरता और लेखन उद्देश्य का सार झलकता है। उस युग में विकसित होने वाली विधाओं में व्यंग्य का मुख्य स्थान रहा। इस काल के लेखको के लेखन कार्य में जिस स्पष्टवादिता, व्यंग्य क्षमता और विषय के प्रति गंभीरता के दर्शन होते हैं वह इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि उस काल के लेखको के लिए लेखन केवल विलासिता का प्रतीक नहीं था अपितु वे अपने दायित्व के निर्वाह के प्रति सजग और गंभीर थे। वास्तव में आधुनिक युग का आरंभिक व्यंग्य गंभीरता का पुट लिए था हास्य के दर्शन इस

काल के व्यंग्य में कुछ कम होते है, इसका मुख्य कारण था कि यह साहित्य मूलतः सामाजिक आलोचना और तीव्र प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम था।

भारतेंदु जी के पश्चात् का काल द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है और इस काल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भाषा के स्वरूप का संस्कार किया। इसी काल के एक सजृनात्मक लेखक थे मुंशी प्रेमचंद जिनका अधिकांश साहित्य तो गंभीरता से भरा था परन्तु उन्होने भी कुछ हल्के–फुल्के परिहास लिखे जिनमें ' बड़े भाई साहब' एक प्रमुख कृति है। इसी कोटि के साहित्यकारों में बाबू गुलाबराय, अन्नपूर्णानन्द वर्मा, बेढब बनारसी, हरि शंकर शर्मा आदि के नाम लिए जा सकते हैं। बेढब बनारसी के लेखों का उद्देश्य प्रकाश्य रूप में विनोद का सृजन था किंतु परोक्ष रूप से राजनीति और समाज की विसंगतियों पर गहरा व्यंग्य करता है। द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कथाकार श्री विश्वम्भरनाथ कौशिक भी उल्लेखनीय व्यंग्यकार थे उनके द्वारा लिखित 'दुबेजी की चिट्ठियां'' नामक स्तंभ सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों और कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य करता है। हिंदी साहित्य में सामाजिक व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करने वाले लेखको की श्रेणी में एक अन्य प्रमुख नाम है छायावाद के प्रसिद्ध कवि निराला जो अपने साहित्य के दूसरे चरण में साम्यवाद की ओर उन्मुख हुए उनके लिखे अनेक निबंध, कहानियां, उपन्यासिकाओं में व्यंग्य प्रतिभा परिलक्षित होती है उनके द्वारा रचित ''कुल्ली भाट'' और बिल्लेसुर बकरिहा'' के साथ ही कुकुरमुत्ता और खजोहरा जैसी लंबी कविताएं उनके व्यंग्य को परिपक्वता प्रदान करती हैं। छायावाद की संस्कृतनिष्ठ भाषा अत्यंत सपाट किंतु व्यंग्यात्मक हो गयी। इनके अतिरिक्त अज्ञेय, विजयदेव नारायण साही, रघुवीर सहाय आदि के नामों का भी उल्लेख किया जा सकता है। पराधीन भारत के इन व्यंग्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समस्याओं के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

स्वाधीनता के बाद तो हास्य–व्यंग्य का विकास और अधिक हुआ। स्वाधीनता के पूर्व विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में जो परिहासपूर्ण या व्यंग्यपरख स्तंभ लिखे जाते थे, वे अब नियमित रूप से लिखे जाने लगे जो हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि बन गए। हरिशंकर परसाई का सुप्रसिद्ध स्तंभ लेख 'कबिरा खड़ा बाजार में' इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। श्री शरद जोशी के द्वारा लिखित स्तंभ भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। व्यंग्य लेखन जो पहले साहित्य की विभिन्न विधाओं का एक अंतरंग तत्व था, अब अपने स्वतंत्र रूप में भी विकसित होने लगा था। यद्यपि स्वतंत्रता के पूर्व भी हरिशंकर शर्मा ने संक्षिप्त हास्य लेख लिखें थे, साथ ही अन्नपूर्णानन्द वर्मा का 'अकबरी लोटा' जैसे हल्के हास्य व्यंग्य आ चुके थे। स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में केशवचंद्र वर्मा ने हास्य–व्यंग्य की कथाओं और निबंधों के लेखन के माध्यम से हास्य–व्यंग्य के स्वतंत्र रूप को स्वीकृति दिलायी। व्यंग्य विधा में लिखा उनका उपन्यास 'किस्सा काठ का उल्लू और कबूतर' संभवतः इस विधा का पहला उपन्यास था। 'बलकम खुद' में संग्रहीत नामवर सिंह के निबंधों की भाषा भी सहजता और कथन की वक्रता लिए हुए व्यंग्यगर्भिता से भरी है। हास्य व्यंग्य लेखको में हिंदी साहित्य के अन्य लेखकों हरिशंकर परसाई, लालकृष्ण शुक्ल, शरद जोशी रवींद्रनाथ त्यागी आदि लेखकों ने हिंदी की व्यंग्य विधा को सशक्त ढ़ंग से निखारा। हरिशंकर परसाई की रचनाएं राजनीति, समाज और संस्कृति की अनेक विसंगतियों और विरूपताओं को सामने ला देती हैं। यही नहीं परसाई जी सामान्य जन की तटस्थता, उदासीनता और व्यर्थ की सहनशीलता पर भी व्यंग्य करते हैं। उन्होने अपनी कहानी 'चूहा और मैं' के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि एक चूहा भी अपनी रोटी के हक के लिए आदमी का सोना मुश्किल कर देता है, पर मनुष्य अपने अधिकार के लिए भी लड़ नहीं सकता। जिन परिस्थितयों को लोग सामान्य मानते हैं उनमें ही परसाई जी विड़बना और विकृति को देखने की अदभुत क्षमता रखते हैं। श्रीलाल शुक्ल की भी ख्याति प्राप्त रचना 'राग दरबारी' ग्रामीण जीवन के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को परत दर परत उखाड़ती है। सामाजिक जीवन की नैतिक हीनता पर करारा व्यंग्य करती है। हिंदी साहित्य के एक अन्य सुप्रसिद्ध साहित्यकार जिनके व्यंग्य आज भी पाठक को गुदगुदाते ही नहीं अपितु सोचने पर विवश करते हैं कि लेखक शरद जोशी की बात में जो सच्चाई है वह हम क्यों नहीं देख पाए ? जोशी जी का लेखन अत्यंत आर्कषक और विविधता से भरा है। उन्होने हास्य और व्यंग्य की विभाजक रेखाएं क्षीण कर दी थी। अपनी विशिष्ट शैली का प्रयोग करते हुए उन्होने गंभीर चिंतन को भी बहुत हल्के–फुल्के ढ़ंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयोग किया। व्यंग्य को अपने लेखन का आधार बना कर लोगों की चेतना को जगाने का कार्य हिंदी के कई अन्य साहित्यकारों ने भी किया। रवींद्रनाथ त्यागी हो या ज्ञान चतुर्वेदी सभी ने अपने लेखन चातुर्य से समाज और राजनीति की विसंगतियों को उजागर किया है। केवल गद्य लेखन में ही नहीं कई प्रसिद्ध हिंदी कवि भी अपनी इस हास्य–व्यंग्य शैली का प्रयोग करते हुए विसंगतियों पर अपनी बात कहते रहे हैं। श्री के.पी. सक्सेना का लेखन भले ही मंच के कवि सम्मेलनों में अधिक सुना गया परन्तु उनमें भी कहीं–कहीं हम अप्रत्याशित ताजगी के साथ गंभीर सामाजिक परेशानियों को देख पाते हैं।

निष्कर्ष

व्यंग्य की वह विधा जो अंग्रेजी में 'सटायर' के नाम से प्रचलित है आधुनिक हिंदी के कई साहित्यकारों के लिए विसंगतियों और विरूपताओं के विरूद्ध अपने लेखन को उजागर करने का एक माध्यम रही है। ऐसा कोई विषय नहीं रहा जिसकी कुरूपता पर इन साहित्यकारों ने प्रहार नहीं किया हो। वास्तव में यह विधा न केवल समस्याओं को जनता के समक्ष एक अलग आकर्षक स्वरूप में प्रस्तुत करती है बल्कि उनमें चिंनत का भी विकास करती है। आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रारंभिक काल से ही साहित्यकारों ने अपनी बात को सामान्य जन को समझाने के लिए इस विधा को एक शस्त्र के रूप में चुना। स्वतंत्रता के पश्चात् सभी भारतीय भाषाओं में ऐसे निबंध लिखे गए जिसमें समय की मांग और पाठकों की रूचि को भी परितुष्ट किया। साहित्य की कोशिश हमेशा ही अनुभूति–प्रेरित नए रास्तों पर चलने की रहती है। वर्तमान में भी लोगों में जागरूकता जगाने हेतु लेखक या साहित्यकार इस विधा का चयन श्रेष्ठ समझते हैं।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018
2. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, डॉ नगेंद्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2013
3. यथासमय व्यंग्य संग्रह, शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ, 2008
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास,
5. श्री रामरूवरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014
6. हिंदी हास्य–व्यंग्य संकलन, संपादकः श्रीलाल शुक्ल, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2003
7. हरिशंकर परसाई संकलित कहानियां संपादक' श्याम कश्यप, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,भारत, 2017